इकाई 1 निर्देशन को समझना

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 निर्देशन : एक परिचय

- 1.3.1 निर्देशन का स्वरूप
- 1.3.2 निर्देशन का प्रयोजन
- 1.3.3 निर्देशन का कार्यक्षेत्र
- 1.3.4 निर्देशन की आवश्यकता
- 1.3.5 निर्देशन के सिद्धांत

1.4 निर्देशन के प्रकार

- 1.4.1 शैक्षिक निर्देशन
- 1.4.2 व्यावसायिक निर्देशन
- 1.4.3 वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन
- 1.4.4 अन्य प्रकार

1.5 निर्देशन और शिक्षा के साथ उसका संबंध

1.6 सारांश

1.7 अभ्यास कार्य

1.1 प्रस्तावना

आपने अवश्य अनुभव किया होगा कि कई बार विद्यार्थी कक्षा में बिल्कुल ध्यान नहीं देते, कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते और विमुख भी होते हैं। ऐसे भी उदाहरण हैं जब वे अपने अध्ययन (पढ़ाई) में पीछे रहते हैं, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बहुत कम होती है और इस कमी की पूर्ति करने के लिए कोई अभिप्रेरणा नहीं होती और एकाग्रता की भी कमी होती है। इसके अतिरिक्त जब वे उच्च अध्ययन के लिए कोई विशिष्ट विषय चुनना चाहते हैं तो वे किसी भी प्रकार का निर्णय करने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि वे विद्यालय आना भी नहीं चाहते। कक्षा में काफी दिवा-स्वप्न देखते हैं, समाजीकरण में न्यूनतम रुचि रखते हैं अथवा आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

उपरोक्त समस्याएँ शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में व्यक्ति के कुसमायोजन की अभिव्यक्ति हो सकते हैं। शिक्षक को इनके कारणों को समझना आवश्यक है तथा इसे समझ कर या तो इनका निवारण इनकी गंभीरता के अनुसार करना चाहिए या उन्हें किसी प्रशिक्षित निर्देशक के पास निर्देशन के लिए भेजना चाहिए। व्यक्ति में निहित क्षमताओं के पूर्ण विकास के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में व्यक्ति के क्रियाकलापों को निदेशित व नियंत्रित करने की क्रिया निर्देशन करता है।

इस इकाई में हम निर्देशन के स्वरूप, प्रयोजन, कार्यक्षेत्र, प्रकार, सिद्धांत व शिक्षा से संबंध की चर्चा करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप इस योग्य हो जाएंगे कि :

- निर्देशन के स्वरूप, प्रयोजन, कार्यक्षेत्र और उसकी आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे;
- निर्देशन के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख कर सकेंगे;
- निर्देशन के प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- शिक्षा के साथ इसके संबंध का उल्लेख कर सकेंगे।

1.3 निर्देशन : एक परिचय

1.3.1 निर्देशन का स्वरूप

निर्देशन में शिक्षा की समस्त प्रक्रिया शामिल है जो बालक के जन्म से ही आरंभ हो जाती है। क्योंकि व्यक्तियों को अपने समस्त जीवन में सहायता की आवश्यकता पड़ती है, यह कहना गलत नहीं होगा कि निर्देशन की आवश्यकता आजीवन पड़ती है।

यदि हम निर्देशन के शाब्दिक अर्थ पर विचार करें तो इसका तात्पर्य है निर्दिष्ट करना, बतलाना, मार्ग दिखाना। इसका अर्थ सहायता करने से कहीं अधिक है। यदि कोई व्यक्ति सड़क पर गिर जाता है तो हम उसे उठने में सहायता करते हैं परंतु हम उसका निर्देशन तबतक नहीं करते जबतक उसकी सहायता किसी निश्चित दिशा में जाने के लिए नहीं करते।

निर्देशन शब्द सभी प्रकार की शिक्षा से जुड़ा है - औपचारिक, अनौपचारिक, व्यावसायिक शिक्षा आदि, जिसमें व्यक्ति की सहायता करना ही उद्देश्य होता है ताकि वह अपने पर्यावरण में भावात्मक रूप से समायोजन कर सके। ऐसा भी कहा जा सकता है कि व्यक्तियों को निर्देशन उपयुक्त चयन और समायोजन बनाने में दिया जाता है। निर्देशन को इसके विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया जा सकता है।

गुड के अनुसार, "निर्देशन एक गतिशील अंतर्वैयक्तिक संबंध की प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति की अभिवृत्ति और अनुवर्ती व्यवहार को प्रभावित करने के लिए तैयार किया गया है।" इस परिभाषा में अंतर्वैयक्तिक संबंधों पर बल दिया जाता है जो व्यक्ति की समाज में उपलब्धि की मात्रा को निर्धारित करने में महान भूमिका निभाते हैं। मार्गदर्शन के माध्यम से वांछनीय अभिवृत्तियों और व्यवहार-विन्यासों को विकसित करने के लिए व्यक्ति की सहायता की जा सकती है।

राष्ट्रीय व्यावसायिक निर्देशन संघ (NVGA) के अनुसार, "अपनी समन्वित व पर्याप्त छवि और कार्यक्षेत्र में स्वयं भूमिका को विकसित तथा स्वीकार करने और वास्तविकता की तुलना में इस अवधारणा की जाँच और व्यक्ति की संतुष्टि के साथ इस अवधारणा को वास्तविकता में परिवर्तित करने तथा समाज को लाभ पहुँचाने की प्रक्रिया में व्यक्ति की सहायता करना निर्देशन है।"

मैकडोनॉल्ड के मतानुसार निर्देशन का उद्देश्य शैक्षिक कार्यक्रमों के लक्ष्यों को प्राप्त करने की अपेक्षा वांछनीय योग्यताओं व कौशलों को उपलब्ध करने में विद्यार्थियों और अध्यापकों की सहायता करना है। उनके शब्दों में, "निर्देशन एक सौकर्य सेवा है, यह शैक्षिक कार्यक्रमों के उद्देश्यों को पूरा करने का दायित्व नहीं लेता; बल्कि यह विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं को उनकी आवश्यकताओं और योग्यताओं के सर्वाधिक उपयुक्त पाठ्यक्रमों को चयन करने, ऐसे अनुदेशकों का पता लगाने में सहायता करता है जो उनकी व्यक्तिगत अपेक्षाओं के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण हों और कार्यकलापों को खोजने में सहायता करने के लिए साधन उपलब्ध कराने पर ध्यान देता हो, जो उन्हें उनकी क्षमताओं को जानने में सहायता करेंगे।"

मैथ्यूसन (1962) के मतानुसार "निर्देशन, व्यक्ति की अपनी विशेषताओं और क्षमताओं की बेहतर जानकारी को प्राप्त करने के लिए शिक्षाप्रद और व्याख्यात्मक क्रियाविधियों के माध्यम से उसकी सहायता करने और सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के अनुसार सामाजिक अपेक्षाओं और अवसरों के साथ उसे अधिक संतोषजनक रूप से जोड़ना है।" इस परिभाषा के अनुसार निर्देशन वह सहायता है जो विभिन्न क्रियाविधियों के माध्यम से व्यक्तियों को प्रदान की जाती है ताकि व्यक्ति सामाजिक अपेक्षाओं और अवसरों को समझने में सक्षम हो सके और उनके अनुसार वह स्वयं को समायोजित करने के उपायों को जान सके।

जब इन सभी परिभाषाओं की समीक्षा की जाती है तो इससे स्पष्ट होता है कि निर्देशन एक सेवा है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को उसकी पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने में सहायता करना है ताकि पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने में वह समाज की सेवा कर सके। इसे वह उपकरण माना जाता है जो शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता करता है। अनेक विद्वानों ने निर्देशन के गतिशील स्वरूप पर बल दिया है। यह और भी अधिक स्पष्ट होगा जब हम निर्देशन के संदर्भ में उपबोधन पर विचार करेंगे।

निर्देशन और उपबोधनः आजकल आम साधारण पत्र-पत्रिकाओं में 'निर्देशन और उपबोधन' अथवा 'उपबोधन और निर्देशन' का एक जैसी अभिव्यंजना के रूप में पाया जाना साधारण सी बात है परंतु निर्देशन और उपबोधन में समानताएँ हैं और अंतर भी हैं।

निर्देशन कार्यक्रम में पाई जानेवाली विभिन्न सेवाओं में से उपबोधन एक सेवा है जबकि निर्देशन जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है तथा व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाने में उसकी सहायता करने का प्रयास करता है। 'उपबोधन' शब्द में क्रियाविधियों, सलाह देने, मनोविश्लेषण आदि का व्यापक क्षेत्र शामिल है। मोसेज़ तथा मोसेज़ ने उपबोधन और निर्देशन के बीच समानताओं का इस प्रकार उल्लेख किया है, "निर्देशन सेवाओं के अंतर्गत उपबोधन को सहायताकारी प्रक्रिया का मूल भाग समझा जा सकता है।"

1.3.2 निर्देशन का प्रयोजन

निर्देशन का कार्य व्यक्ति को योग्यताओं, अभिरूचियों और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को ढालने में सहायता करना है। दूसरे शब्दों में इसका तात्पर्य वांछित दिशा में विकास करने में व्यक्ति की सहायता करना है और बदलते समय और समाज की आवश्यकताओं तथा मांगों के अनुकूल स्वयं को बनाना है।

प्रारंभिक विद्यालय स्तर पर निर्देशन का प्रयोजन घर, विद्यालय, धर्म और समकक्ष संबंधों (विद्यार्थी संबंधों) जैसी प्राथमिक समूह शक्तियों के एकत्रीकरण के लिए विद्यार्थियों की सहायता करना है। ये वे शक्तियाँ हैं जो विद्यार्थियों की किशोरावस्था के लिए आधार बनाती हैं और फिर उन शक्तियों को एक सामंजस्यपूर्ण व्यक्ति सामंजस्यपूर्ण में परिवर्तित करती हैं।

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर निर्देशन, मुख्य रूप से इन शक्तियों के विभिन्न वैशिष्ट्य पहलुओं पर बल देता है क्योंकि ये विद्यार्थियों के ज्ञान, स्वीकरण और स्वयं की दिशा/ पहलुओं को प्रभावित करता है। शैक्षिक योजना, रोजगार चयन, अंतर्वैयक्तिक संबंधों व अंतर्वैयक्तिक स्वीकरण के क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं और अवसरों के अनुसार अपने विकास के लिए विद्यार्थियों को सेवाएँ प्रदान करना माध्यमिक स्तर पर निर्देशन सेवाओं का मूल कार्य है।

इस प्रकार, निर्देशन का प्रयोजन अधिक वैयक्तिक संतुष्टि और सामाजिक उपयोगिता, जिसमें विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक आदि शामिल हैं, के लिए आत्म-स्थितिपरक संबंधों को समझने और उनसे निबटने के लिए व्यक्ति की क्षमता में सुधार करना है।

विद्यार्थियों के लिए योगदान

क) उनकी योग्यताओं, अभिक्षमताओं, अभिरूचियों और कमियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करके उन्हें स्वयं को समझने में सहायता करना।

ख) अन्य लोगों से बेहतर संबंध बनाना और उस परिवेश को समझना जिसमें वे रहते हैं।

ग) रोजगार, विषयों आदि के बारे में विद्यालय से सर्वाधिक जानकारी प्राप्त करना।

घ) अपनी अभिरुचियों, योग्यताओं, का पता लगाना, कार्यशील समाज के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानना और उनकी योग्यताओं का लाभ उठाने के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

च) प्रतिभाशाली, मंद अध्येताओं तथा विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की पहचान करना एवं उनमें उचित अभिवृत्ति विकसित करने में उनकी सहायता करना और उनकी संभावित योग्यताओं का अधिक से अधिक उपयोग करना।

अध्यापक की सहायता

1. निर्देशन, वास्तव में निर्देशन व्यक्ति द्वारा चलाए जा रहे सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से अपने विद्यार्थियों के बारे में अध्यापकों की जानकारी बढ़ाने के लिए अवसर प्रदान करता है। विद्यालय उपबोधक अध्यापकों को परीक्षण कार्यक्रमों का संचालन करने और परीक्षाओं के परिणामों की व्याख्या कराने में सहायता करता है। ये परीक्षा परिणाम वह सूचना देते हैं जो अध्यापकों को उनके विद्याथियों के कक्षा व्यवहार और कार्य-निष्पादन को बेहतर रूप से समझने में उनकी सहायता करते हैं।

2. विद्यार्थियों की विशेष अभिरूचियों, क्षमताओं और पूर्व अनुभवों संबंधी आंकड़े निर्देशन संकाय द्वारा संचयी अभिलेख पर उपलब्ध कराए जाते हैं। विद्यार्थियों की शारीरिक (भौतिक) दशा, चिकित्सीय इतिहास, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक अभिलेख, मानकीकृत परीक्षाओं में प्राप्तांक, वैयक्तिक विशेषताएँ आदि विद्यार्थी को बेहतर शिक्षण प्रदान करने में अध्यापक की सहायता करते हैं।

3. अभिभावकों के लिए लाभदायक

   बालक की बुद्धि, योग्यताओं, अभिरुचियों और क्षमताओं की स्पष्ट जानकारी देना, कार्यक्रम अभिभावक को बालक जैसा है वैसा ही उसे जानने, समझने और स्वीकार करने में सहायता करता है।

4. समस्त समुदाय समष्टि की बेहतर मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने में सहायता करना।

5. पूरे विद्यालय की कई प्रकार से मदद करना, जैसे विद्यार्थियों की उनकी अभिरुचि और अभिक्षमताओं के आधार पर उपबोधन करके पाठ्यक्रम चुनने में सहायता करना। विद्यालयी कार्यक्रम के उन पहलुओं पर प्रशासन संबंधी जानकारी देना जो विद्यार्थियों के रोजगार और व्यक्तित्व निर्माण से संबंधित हैं।

1.3.3 निर्देशन का कार्यक्षेत्र

निर्देशन में निम्नलिखित क्षेत्र शामिल हैं :

1. **व्यक्ति एवं पाठ्यक्रम**

   क) शैक्षिक उपलब्धि और प्रगति

   ख) पाठ्यचारी और पाठ्य सहगामी कार्यकलापों के माध्यम से वैयक्तिक विकास

2. **विद्यालय में व्यक्ति के निजी-सामाजिक संबंध**

   क) स्वयं को समझना और एक-दूसरे की वैयक्तिक विशेषताओं के संबंधों और व्यवहार की जानकारी

   ख) दूसरों को समझना और उनके साथ संबंध स्थापित करना

3. **व्यक्ति व उसकी शैक्षिक, व्यावसायिक अपेक्षाएं एवं अवसर**

   क) भावी शिक्षा और व्यावसायिक अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए तैयार करना

   ख) शैक्षिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में उपयुक्त अवसरों का उपयोग

शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन के कार्यक्षेत्र को समझने के लिए अब हम उपर्युक्त प्रत्येक क्षेत्र पर चर्चा कर सकते हैं।

1. क) **शैक्षिक उपलब्धि और प्रगति :** कभी-कभी ऐसा भी होता है कि विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है परंतु बुद्धि-लब्धि अधिक होती है। ऐसे मामले में निर्देशन कार्यकर्ता कुछ मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से पता लगा सकता है कि कमी कहाँ है और इस प्रकार वांछित स्तर प्राप्त करने में विद्यार्थी की सहायता कर सकता है। कभी-कभी विद्यार्थी की अध्ययन से संबंधित कुछ ऐसी समस्याएँ भी होती हैं कि वह अध्ययन नहीं कर पाता और अपने शिक्षकों के साथ उन्हें सुलझाने में सफल नहीं हो पाता। इसलिए, इन परिस्थितियों में निर्देशन कार्यकर्ता प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है।

   ख) **वैयक्तिक विकास :** निर्देशन कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किए जाते हैं कि विद्यार्थियों का वैयक्तिक विकास सर्वोत्तम रूप से हो पाता है।

2. **वैयक्तिक सामाजिक संबंध :** दूसरों के साथ अच्छी तरह आगे बढ़ना और उनके साथ अच्छे संबंध बनाना इस बात का सूचक है कि व्यक्ति समाज में भली-भांति समायोजित है। निर्देशन स्वयं को समझ कर दूसरों के साथ प्रभावकारी ढंग से व्यवहार करने के लिए व्यक्ति की सहायता करता है।

3. **शैक्षिक और व्यावसायिक अपेक्षाओं के साथ व्यक्ति का संबंध :** निर्देशन शैक्षिक विषयों, रोजगार आदि के चयन जैसे जीवन के विभिन्न चरणों में प्रभावकारी निर्णय करने में व्यक्ति की सहायता करता है और विभिन्न रोजगारों और उनसे जुड़े क्षेत्रों से संबंधित आवश्यक सूचना उपलब्ध कराता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. निम्नलिखित को मिलाइए :

समूह -क	**समूह - ख**
i) व्यक्ति का पाठ्यचर्या के साथ संबंध	क) दूसरों को समझना और उनके साथ संबंधों को समझना
ii) विद्यालय में विद्यार्थियों के वैयक्तिक-सामाजिक संबंध	ख) शैक्षिक उपलब्धि और प्रगति
iii) विद्यार्थी का शैक्षिक-व्यावसायिक अपेक्षाओं और अवसरों के साथ संबंध	ग) स्वयं को और वैयक्तिक विशेषताओं के पारस्परिक और व्यवहार के साथ संबंध को समझना
iv) विद्यालय में विद्यार्थी के वैयक्तिक-सामाजिक संबंध	घ) उपयुक्त शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों (सुविधाओं) का उपयोग

1.3.4 निर्देशन की आवश्यकता

पुराने समय में, जब समाज बहुत कम जटिल था, यदि किसी स्थानीय समुदाय में या परिवार के किसी सदस्य को किसी भी प्रकार की समस्या होती थी तो परिवार का मुखिया अथवा समुदाय का नेता उसका निर्देशन कर देता था। यद्यपि इस प्रकार का मार्गदर्शन समस्या की गहरी और पूरी जानकारी के बिना तात्कालिक परामर्श होता था अथवा यह किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण की सहायता के बिना बालकों का निर्देशन करने के लिए अध्यापकों और अभिभावकों का अधिकार क्षेत्र होता था जो कई बार सहायता करने के बजाए भ्रामक होता था। परंतु अब यह समाज में विभिन्न परिवर्तनों के कारण संभव नहीं है और व्यक्ति के निर्देशन के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित व्यक्तियों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

मैथ्यूसन के मतानुसार, आवश्यकता के चार मूलभूत क्षेत्र हैं : जैसे, स्वयं को समझने की आवश्यकता, परिस्थिति की माँगों के अनुसार समायोजन करना, भावी दशाओं के लिए स्वयं को ढालना (तैयार करना) और स्वपूर्ति करना एवं वैयक्तिक क्षमताओं को विकसित करना। इसलिए कहा जा सकता है कि निर्देशन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से पड़ती है :

1. शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। जनसंख्या में वृद्धि और सीमित रोजगार के अवसरों के कारण, शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हो रही है। शिक्षित बेरोजगार युवाओं की सहायता उचित निर्देशन से की जा सकती है, ताकि वे अपनी क्षमताओं के अनुकूल कार्य दशा की पहचान कर सकें।

'कुछ बच्चे बिल्कुल अनुक्रिया ही नही करते'

2. हमारे विद्यालय इस समय प्राथमिक, मिडिल और उच्चतर स्तरों पर गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और योग्यताओं के अनुसार पाठ्यचर्या विकसित करके निर्देशन सेवाएँ शैक्षिक प्राधिकारियों की सहायता कर सकती हैं।
3. जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण गहन और व्यापक निर्देशन की आवश्यकता है।
4. अपराध दर व मानसिक रोग वृद्धि के कारण बालवाड़ी से लेकर युवा अवस्था तक अपने युवाओं की सहायता करने के लिए निर्देशन की विशेष सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है।

5. निर्देशन के माध्यम से विशेष कार्यों के लिए सही व्यक्तियों की पहचान की जा सकती है।

6. समाज में हो रहे परिवर्तनों के कारण, परिवार में द्वंद्व बढ़ते जा रहे हैं और किशोर तनावपूर्ण परिस्थितियों से गुजर रहे हैं जिसके कारण कुंठाएँ बढ़ रही हैं। अनुशासन व अपराध की समस्याएँ भी बढ़ रही हैं।

मां काम पर बाहर गई है
और पापा घर देर से आएंगे....

अब परिवार निर्देशन का कोई
प्रभावी स्रोत नही रह गया है

7. जीवन शैली में तेजी से बदलाव और जटिलता के कारण अभिभावकों पर समाज की माँगे भी बढ़ रही हैं जिसने अभिभावकों और बालकों के बीच वैयक्तिक संपर्क को कम कर दिया है। इस प्रकार की घटनाओं के कारण कुसमायोजित बालकों की समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं जो बहुत आम होती जा रही हैं।

मेरे बच्चे अच्छे है; उन्हें मार्गदर्शन
की कोई आवश्यकता ही नही है

8. पहले विभिन्न रोजगार के अवसरों के बारे में अधिक सजगता और जागरूकता नहीं थी। एक किसान का बेटा कृषि व्यवसाय अपनाता था और वकील का बेटा वकालत करता था चाहे उनकी अभिक्षमता / अभिरूचि उस व्यवसाय के लिए हो या न हो। निर्देशन के माध्यम से विद्यार्थियों की योग्यताओं, अभिरूचियों और अभिक्षमताओं के अनुसार व्यवसाय या कोर्स चयन में उनकी सहायता की जा सकती है।

9. मानव मूल्यों में गिरावट तथा निहित स्वार्थों के कारण हो रहे धार्मिक तथा नैतिक शोषण के कारण सही रास्ता चुनने के लिए विद्यार्थियों के लिए निर्देशन की आवश्यकता अनिवार्य हो गई है ताकि वे दूसरों से गुमराह होने के बजाए धर्म और नैतिकता में अपना चिंतन और कार्य विकसित कर सकें।

10. निर्देशन की आवश्यकता व्यक्तियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए भी पड़ती है।

11. हमारे देश में कुछ समस्या-क्षेत्र हैं जिनमें मार्गदर्शन की आवश्यकता है जैसे, जाति समस्याएँ, नई आर्थिक नीतियाँ और सेवानिवृत्त व्यक्ति की समस्याएँ।

12. महिलाओं की परंपरागत छवि में परिवर्तन के कारण तलाक और पृथक्करण की अधिक से अधिक समस्याएँ सामने आ रही हैं। अतः पारिवारिक ढांचे में संतुलन बनाने के लिए निर्देशन की आवश्यकता है।

इस प्रकार निर्देशन की भूमिका जन्म से मृत्यु तक जीवनपर्यंत चलती रहती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

2. निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) निर्देशन 'शिक्षित बेरोजगारों' की सहायता करता है। (सही / गलत)

ii) निर्देशन व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करने में सहायता करता है। (सही / गलत)

iii) अनुशासन और अपराध की समस्याएँ सुलझाने में निर्देशन की आवश्यकता नहीं पड़ती। (सही / गलत)

iv) निर्देशन तनाव और कुंठाएँ बढ़ाता है। (सही / गलत)

v) निर्देशन अंतर्वैयक्तिक संबंधों को सुधारने में सहायता करता है। (सही / गलत)

vi) निर्देशन व्यक्तियों को सही मार्ग दिखाता है। (सही / गलत)

vii) निर्देशन विद्यार्थियों की केवल शैक्षिक आवश्यकताएँ पूरी करता है। (सही / गलत)

1.3.5 निर्देशन के सिद्धांत

निर्देशन कुछ सिद्धांतों पर आधारित है। यह आवश्यक है कि हमें मानव जीवन में उपयोग के पहले किसी भी विषय के ज्ञान के प्रयोग में निहित विभिन्न कार्यों की जानकारी तथा उस विषय के बुनियादी सिद्धांतों को समझ लेना चाहिए। इन सिद्धांतों का अध्ययन करने से पहले, हमें निम्नलिखित कथनों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा :

"व्यक्ति के अपने इष्टतम, वैयक्तिक, सामाजिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास की उपलब्धि में सहायक उन सभी के समस्त प्रयास और प्रभाव शामिल हैं जो साहचर्य,

उपबोधन, तथ्यों के विस्तार, उपयुक्त और विशेष तकनीकों का प्रयोग और पर्यावरण के नियंत्रण के माध्यम से व्यक्ति की सहायता करते हैं।"

1. **निर्देशन आजीवन प्रक्रिया है** : निर्देशन एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो बाल्यावस्था से मृत्युपर्यंत चलती है। यह कोई ऐसी सेवा नहीं है जो किसी विशेष निर्धारित समय अथवा स्थान पर आरंभ अथवा समाप्त होती है।

2. **निर्देशन वैयक्तिकरण पर बल देता है** : यह इस बात पर महत्व देता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए स्वतंत्रता दी जानी चाहिए और जब आवश्यकता हो तो व्यक्ति का निर्देशन किया जाना चाहिए।

   ट्रूमैन एल.केलीज़ ने लोकतांत्रिक बिंदु पर महत्व देते हुए कहा कि, "निर्देशन करते समय किसी विद्यार्थी के सामान्य औसत व्यवहार को आधार बनाने के बजाए उसकी योग्यताओं और अभिक्षमताओं के विवरण को आयाम देना चाहिए।"

   विभिन्न स्तरों पर व्यष्टि सापेक्ष-शिक्षा के लिए, निर्देशन सेवाओं का उचित संगठन बहुत जरूरी है ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अभिरुचियों और अभिक्षमताओं को अनोखे तरीके से विकसित कर सके।

3. **निर्देशन आत्म-निर्देशन को महत्व देता है** : निर्देशन का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का विकास इस प्रकार करना है कि उसे निर्देशन की आवश्यकता न हो। निर्देशन व्यक्ति को अपने पर्यावरण में अच्छी तरह समायोजित करता है और उसे आत्म-निर्भरता तथा आत्म-निर्देशन की ओर अग्रसर करता है। जो विद्यार्थी सहायता प्राप्त करना चाहता है वह अपने उपबोधक से पूछताछ करता है अथवा उससे अपनी कठिनाइयों को दूर करने के लिए अनुरोध कर सकता है। परंतु निर्देशन की प्रशंसा वह तब तक करता है जब उसे अनेक वैकल्पिक प्रक्रियाएँ समझाई जाती हैं जिन्हें वह प्रत्येक प्रक्रिया के संभावित परिणामों के साथ अपना सके।

4. **निर्देशन सहयोग पर आधारित है** : निर्देशन व्यक्तियों के पारस्परिक सहयोग पर निर्भर करता है। किसी को भी व्यक्ति की स्वयं की सहमति के बिना निर्देशन प्राप्त करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

5. **निर्देशन सभी के लिए है** : निर्देशन प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं में विकास देखता है। यद्यपि कुसमायोजित विद्यार्थियों को उपबोधक से अधिक समय मिलता है परंतु निर्देशन का मूल सिद्धांत यह है कि निर्देशन कुछ व्यक्तियों की अपेक्षा अनेक व्यक्तियों को उपलब्ध होना चाहिए। यह बहुत अच्छा या सहायक होगा कि सामान्य और श्रेष्ठ बालकों पर भी ध्यान देकर उनके बौद्धिक-विकास को उद्दीप्त किया जाए।

6. **निर्देशन एक संगठित कार्यकलाप है** : निर्देशन प्रासंगिक कार्यकलाप है। एक व्यापक कार्यक्रम होने के बावजूद, कुछ प्राप्त करने का इसका एक निश्चित प्रयोजन होता है। अतः यह एक व्यवस्थित और सुसंगठित क्रियाकलाप है।

7. **निर्देशन कार्यकर्ताओं को विशेष तैयारी की आवश्यकता होती है** : साधारणतः यह माना जाता है कि निर्देशन में सामान्य प्रशिक्षण प्रत्येक अध्यापक की न्यूनतम आवश्यकता होनी चाहिए। विशेषज्ञ के लिए शिशु विकास, किशोर विकास, मानसिक स्वास्थ्य आदि में ज्ञान व व्यावहारिक अनुभव सहित मनोविज्ञान में प्रशिक्षण होना चाहिए। निर्देशन कार्यकर्ता को यह भी जानना चाहिए कि उसके समुदाय में किस प्रकार की एजेंसियाँ और संसाधन उपलब्ध हैं ताकि सहायता प्राप्त करनेवाले व्यक्ति इन संसाधनों का उपयोग कर सकें।

   इसके साथ-साथ वर्तमान विद्यालयी निर्देशन कार्यक्रम का आवधिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

8. **निर्देशन व्यक्तिगत भेदों को सम्मान देता है :** दो व्यक्ति एक समान नहीं होते। निर्देशन विद्यार्थियों के बीच इन व्यक्तिगत भेदों को समझता है और प्रत्येक व्यक्तियों की विलक्षण आवश्यकताओं, समस्याओं और विकासात्मक विशेषताओं को सम्मान प्रदान करता है।

9. **निर्देशन अनभिव्यक्त तथ्यों के उल्लेख का ध्यान रखता है :** निर्देशन के सभी व्यवहारों में सर्वाधिक हानिकारक निर्देशन व्यवहार उपयुक्त आंकड़ों के बिना उपबोधन करना है। आंकड़ों के अभाव में निर्देशन नीम-हकीम खतरा-ए-जान जैसा है। बुद्धिमत्तापूर्वक निर्देशन करने के लिए यथासंभव पूरी जानकारी के साथ, व्यक्तिगत मूल्यांकन और अनुसंधान के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए और प्रगति तथा निर्देशन कार्यकर्ताओं के लिए उपलब्धि के सही संचयी रिकार्ड उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

10. **निर्देशन लचीला होता है :** संगठित निर्देशन कार्यक्रम व्यक्ति एवं समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार लचीला होना चाहिए।

11. **निर्देशन अंतःसंबंधित क्रियाकलाप है :** प्रभावकारी निर्देशन को व्यक्ति के बारे में सम्पूर्ण सूचना की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि किसी भी समस्या को समूचे कार्यक्रम के साथ सहसंबंध स्थापित किए बिना अलग से देखना कठिन होता है। जैसे शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन अंतःसंबंधित हैं परंतु इन्हें समूचे निर्देशन कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के तौर पर अलग समझा जा सकता है।

12. **निर्देशन आचार संहिता पर बल देता है :** उपबोधित किए जाने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व के प्रति सम्मान मार्गदर्शन के नैतिक अनुप्रयोगों में शामिल होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

3. निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) निर्देशन जन्म के समय से ही आरंभ हो जाता है और किशोरावस्था तक चलता है। (सही / गलत)

ii) निर्देशन में वैयक्तिकरण पर बल दिया जाता है। (सही / गलत)

iii) निर्देशन व्यक्ति को केवल अपना समायोजन करने में सहायता करता है। (सही / गलत)

iv) निर्देशन केवल कुसमायोजित व्यक्तियों की आवश्यकताएँ ही पूरी करता है। (सही / गलत)

v) निर्देशन व्यक्तिगत भेदों पर ध्यान नहीं देता। (सही / गलत)

vi) निर्देशन कड़े नियमों से बंधा है। (सही / गलत)

vii) निर्देशन सूचना की गोपनीयता बनाए रखता है। (सही / गलत)

viii) निर्देशन कार्यकर्ताओं को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। (सही / गलत)

ix) निर्देशन एक प्रासंगिक क्रियाकलाप है। (सही / गलत)

1.4 निर्देशन के प्रकार

निर्देशन एक सतत् प्रक्रिया है और यह जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित है। अतः निर्देशन की आवश्यकता जीवन के विभिन्न पहलुओं में पड़ती है।

डब्ल्यू.एम.प्रोक्टर के अनुसार, निर्देशन के विभिन्न प्रकार हैं :

1. शैक्षिक निर्देशन
2. व्यावसायिक निर्देशन
3. सामाजिक और नागरिक क्रियाकलापों में निर्देशन
4. स्वास्थ्य और भौतिक क्रियाकलापों में निर्देशन
5. अवकाश समय के सदुपयोग में निर्देशन
6. चरित्र निर्माण क्रियाकलापों में निर्देशन

जॉन एम.ब्रेमर के अनुसार निर्देशन दस प्रकार का होता है। ये दस प्रकार हैं :

1. शैक्षिक निर्देशन
2. व्यावसायिक निर्देशन
3. धार्मिक निर्देशन
4. 'गृह संबंधों के लिए' निर्देशन
5. 'नागरिकता के लिए' निर्देशन
6. 'अवकाश और मनोरंजन के लिए' निर्देशन
7. 'निजी कल्याण में' निर्देशन
8. 'सही कार्य करने में' निर्देशन
9. 'विचारशीलता और सहयोग में' निर्देशन
10. 'हितकारी और सांस्कृतिक क्रिया में' निर्देशन

पैटर्सन तथा अन्य ने निर्देशन के पाँच प्रकार बतलाए हैं। ये हैं :

1. शैक्षिक निर्देशन
2. व्यावसायिक निर्देशन
3. निजी निर्देशन (जिसमें सामाजिक, भावात्मक, संवेगात्मक और अवकाश समय निर्देशन शामिल हैं)
4. स्वास्थ्य निर्देशन
5. आर्थिक निर्देशन

उपर्युक्त से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि निर्देशन के मुख्य प्रकार हैं :

1. शैक्षिक निर्देशन
2. व्यावसायिक निर्देशन
3. वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन

1.4.1 शैक्षिक निर्देशन

यह व्यक्ति की सहायता करने की प्रक्रिया है ताकि वह अपनी शिक्षा के लिए सर्वाधिक अनुकूल परिवेश में अपने आप को स्थापित कर सके। यह व्यक्ति के शैक्षिक कार्यक्रम को बुद्धिमत्तापूर्वक योजना बनाने के लिए सहायता करने से जुड़ा है ताकि व्यक्ति सफलतापूर्वक उस कार्यक्रम को कार्यान्वित कर सके जिसे समाज अपने लिए और उसके लिए उचित समझता है। यह पाठ्यक्रमों, पाठ्यचर्या और अध्ययन से जुड़ा है।

1.4.2 व्यावसायिक निर्देशन

उचित व्यवसाय चुनने, इसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश करने तथा प्रगति करने में व्यक्ति की सहायता करने की प्रक्रिया व्यावसायिक निर्देशन कहलाता है। व्यावसायिक निर्देशन माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालयों में शैक्षिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के रूप में व्यापारिक तथा वाणिज्यिक पाठ्यक्रमों की श्रेणियों से जुड़ा है।

1.4.3 वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन

वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन में सामाजिक, भावात्मक और अवकाश समय निर्देशन शामिल है। यह वैयक्तिक निर्देशन से जुड़ा है जिसमें स्वास्थ्य, भावात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन आदि शामिल हैं। वैयक्तिक निर्देशन का प्रयोजन व्यक्ति की उसके भौतिक-शारीरिक-भावात्मक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास में उसकी सहायता करना है।

1.4.4 अन्य प्रकार

मनोरंजनात्मक (मनोविनोदार्थ) मार्गदर्शन निर्देशन (मनोविनोद) चुनने में व्यक्ति की सहायता करता है जो उसकी वैयक्तिक विशेषताओं के अनुकूल होते हैं। समुदाय निर्देशन में विभिन्न क्रियाकलापों के कार्यक्रम की योजना तैयार करने में व्यक्ति के लिए सहायता करना शामिल है। ये क्रियाकलाप व्यक्ति की अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं और उसके अन्य कार्यकलापों से संतुलन बनाए रखते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4. रिक्त स्थान भरिए :

   i) निर्देशन एक .... प्रक्रिया है।

   ii) व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति की .... चुनने में सहायता करता है।

   iii) निजी निर्देशन का प्रयोजन व्यक्ति की .... और .... विकास में सहायता करना है।

   iv) मनोरंजनात्मक (मनोविनोदार्थ) मार्गदर्शन .... चुनने में सहायता करता है।

   v) समुदाय निर्देशन में .... के कार्यक्रम की योजना बनाना शामिल है।

1.5 निर्देशन और शिक्षा के साथ उसका संबंध

निर्देशन सेवाएं पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम का अभिन्न अंग हैं। वर्तमान प्रयुक्त अर्थ में पहले निर्देशन सेवाओं को विद्यालय पद्धति में विस्तार कार्यकलाप माना जाता था। इसे विद्यालयों के लिए बिल्कुल अनावश्यक और अनुपयुक्त समझा जाता था। फिर भी शिक्षकों और जनप्रतिनिधियों द्वारा विस्तृत और उपयुक्त मूल्यांकनों द्वारा निर्देशन सेवाओं को स्वीकार कर लिया गया है। इसे बाहर से नहीं जोड़ा गया है बल्कि शैक्षिक प्रक्रिया के लिए प्रमुख और अनिवार्य माना गया है।

यह कहना कि निर्देशन सेवाएँ पूरे शैक्षिक प्रयास का मुख्य और अभिन्न अंग हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ये सेवाएँ अध्यापन अथवा प्रशासन के समरूप हैं अथवा इनका स्थान ले सकती हैं या इनका प्रतिस्थानी हैं। निर्देशन सेवाओं की अपनी स्वयं की पहचान है। निर्देशन और तथापि निर्देशन तथा अध्यापन व प्रशासन के कुछ पक्षों के बीच तीव्र सीमांकन रेखाओं की अपेक्षा अंतःसंबंधों के क्षेत्र हैं। वास्तव में एक अच्छा अध्यापक निर्देशन के अनेक कार्य करता है। अन्य बातों के साथ-साथ, वह न केवल उपलब्धि बल्कि समायोजन में विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा और कठिनाइयों को समझने के लिए मूल्यवान सूचना और उपयोगी जानकारी भी प्रदान करता है। साथ ही, वह कक्षा का वातावरण निर्मित करता है जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हो। वह विद्यार्थी और उसके माता-पिता के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाएँ प्रदान करता है और अनेक अन्य कार्य करता है।

प्रशासन और निर्देशन, सेवाओं के मध्य भी अंतःसंबंधों का एक क्षेत्र है। सामान्यतः, निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध कराना प्रशासन का दायित्व है और निर्देशन कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के अधिकार निर्देशन उपबोधक को दिए जाने चाहिए।

निर्देशन सेवाएँ अध्यापकों और प्रशासकों की सहायता करती हैं। अध्यापक प्रत्यक्ष भागीदारी द्वारा और प्रशासक सेवाएँ उपलब्ध कराकर सहायता करते हैं।

शिक्षा और निर्देशन एक दूसरे से संबंधित हैं। संक्षेप में, शिक्षा में निर्देशन सम्मिलित है। सभी तरह का निर्देशन शिक्षा है परंतु शिक्षा के कुछ पहलू निर्देशन नहीं हैं। दोनों का उद्देश्य एक जैसा हो सकता है जैसे व्यक्ति का विकास परंतु प्रयोग की जाने वाली विधियाँ भिन्न हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इस समय माध्यमिक स्तर की व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है।

व्यावसायिक शिक्षा किसी विशिष्ट रोजगार अथवा व्यवसाय के लिए व्यक्ति में विद्यमान ज्ञान, कौशलों और अभिवृत्तियों से संबंधित है। यह उस अनुभव से संबंधित है जो किसी व्यक्ति को सामाजिक रूप से लाभदायक काम-धंधे को सफलतापूर्वक करने के योग्य बनाता है। अधिकांश रोजगारों में जिनमें अर्धकुशल व्यवसाय शामिल हैं सफलता प्राप्त करने के लिए अभीष्ट कौशलों और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। वर्तमान संचार प्रौद्योगिकी युग में कुछ विशेष कौशलों के संबंध में बुनियादी पृष्ठभूमि और शिक्षा की आवश्यकता पड़ेगी।

लिपिकीय, तकनीकी और व्यावसायिक रोजगार जैसे सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते जा रहे हैं। इन सभी रोजगारों के लिए व्यावसायिक, तकनीकी और संवृत्तिक शिक्षा की जरूरत पड़ती है। हमारी शिक्षा पद्धति में सार्वजनिक शिक्षा कार्यक्रम की पाठ्यचर्या और दिशा में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की सर्वाधिक आवश्यकता है। इस प्रकार के परिवर्तनों से ही उन सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का एकमात्र समाधान हो सकेगा जिनका हम आजकल सामना कर रहे हैं।

1.6 सारांश

हमने निर्देशन के स्वरूप, प्रयोजन और कार्यक्षेत्र, आवश्यकता और सिद्धांतों पर चर्चा की और इस पर भी विवेचन किया है कि निर्देशन शिक्षा के साथ किस प्रकार जुड़ा है।

हमने यह भी जाना कि सर्वोत्तम संभव चयन और समायोजन करने में व्यक्तियों को निर्देशन प्रदान किया जाता है। यह भी स्पष्ट है कि निर्देशन एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्तिगत मतभेदों को महत्व देता है और सभी के लिए है। विद्यालय जानेवाले बालकों की संख्या में वृद्धि, सामाजिक परिवर्तनों, जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, पारिवारिक ढांचे में परिवर्तनों, कुसमायोजनों के कारण तथा रोजगार विकल्पों आदि के लिए निर्देशन की सर्वाधिक आवश्यकता पड़ती है।

निर्देशन का उद्देश्य, व्यक्ति की आवश्यकताओं और योग्यताओं को ध्यान में रखकर समाज में प्रभावकारी रूप से समायोजित करने के लिए व्यक्ति की सहायता करना है। हमने इस इकाई में निर्देशन के प्रमुख प्रकारों की चर्चा की है, जैसे शैक्षिक, व्यावसायिक, वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन आदि। निर्देशन शिक्षा का अभिन्न अंग है जो पूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने में व्यक्ति की सहायता करता है।

1.7 अभ्यास कार्य

1. 'निर्देशन' शब्द की परिभाषा दीजिए और बतलाइए कि निर्देशन की कोई आवश्यकता है अथवा नहीं? कारण बतलाइए।
2. अपने क्षेत्र (मोहल्ले) में किसी एक ऐसे विद्यालय का पता लगाइए जहाँ निर्देशन एकक हो। निम्नलिखित बिंदुओं पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए:

   क) विद्यार्थियों में व्यावसायिक जागरूकता।

   ख) विद्यालय / घर / समकक्ष समूह आदि के संबंध में समायोजन समस्याएँ।
3. निर्देशन शिक्षा से किस प्रकार जुड़ा है? स्पष्ट कीजिए।
4. किसी रोजगार कार्यालय का दौरा कीजिए और कला/ विज्ञान/ वाणिज्य/ व्यवसाय से जुड़े विभिन्न रोजगारों (वृत्तियों) के बारे में पता लगाइए और उन पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
5. निर्देशन के चार सिद्धांत कौन से हैं?
6. निर्देशन का प्रयोजन और कार्यक्षेत्र क्या है?
7. निर्देशन के विभिन्न प्रकार बतलाइए और उनका उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
8. अपने क्षेत्र में बाल अपराधियों के सुधार गृह का दौरा कीजिए और उन्हें किस प्रकार की पुनर्वास सुविधाएँ दी जा रही हैं, उन पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।